ब्रजभाषा का विकास एवं विशेषताएँ

ब्रजभाषा का सम्बन्ध आज केवल ब्रजक्षेत्र से जोड़कर देखा जाता है। ब्रज का पुराना अर्थ गौओं का समूह या चारागाह आदि हैं। पशुपालन के प्राधान्य के कारण यह क्षेत्र कालान्तर ब्रज कहलाया और इसी आधार पर इसकी भाषा ब्रजभाषा कही जाती है। इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश के परवर्ती रूप में हुआ है। पालि के पश्चात शौरसेनी का प्रभुत्व बढ़ा। शौरसेनी से विकसित प्राकृत और अपभ्रंश भाषाएं बनी और अपभ्रंश से ही ब्रजभाषा का विकास हुआ।

आज यह भाषा उत्तर प्रदेश के अलीगढ़, हरदोई, इटावा, पीलीभीत, शाहजहाँपुर, फर्रुखाबाद, कानपुर, आगरा, मथुरा, बुलन्दशहर एटा, मैनपुरी, बदायूँ, रायबरेली, हरियाणा के गुड़गाँव, फरीदाबाद में बोली जाती है। राजस्थान के भरतपुर, धौलपुर, करौली और जयपुर के पूर्वी भाग, मध्यप्रदेश के ग्वालियर के पश्चिमी भाग में इसी भाषा का प्रयोग होता है। गंगा के पार नैनीताल की तराई में भी इसी का विस्तार है। गंगा यमुना का दोआब आर्यों की पवित्र ब्रजभूमि होने के कारण 'अन्तर्वेद' कहलाता है। इसी कारण ब्रजभाषा को 'अन्तर्वेदी' भी कहा जाता है।

सन 1931 की जनगणना के अनुसार इस भाषा का प्रयोग करने वालों की संख्या 76 लाख बताई गई है। वर्तमान समय में इसके बोलने वालों की संख्या एक करोड़ पच्चीस लाख बताई गई है।

मध्य युग में ब्रजभाषा का प्रचार-प्रसार हो गया था। मुगल दरबारों में भी ब्रजभाषा का प्रयोग होता था। चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने ब्रजभाषा का उदय पुरानी हिन्दी या परवर्ती अपभ्रंश से माना है। वे ब्रजभाषा का उद्भव 10वीं शताब्दी से मानते हैं। डॉ शिवप्रसाद सिंह ने "सूरपूर्व ब्रजभाषा" में इसका उद्गम सन 1000 के आस-पास शौरसेनी अपभ्रंश से माना है- "सन 1000 के आस-पास शौरसेनी अपभ्रंश की अपनी जन्मभूमि में ब्रजभाषा का उदय हुआ।"

कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी ने इस भाषा का सम्बन्ध गुजरात तथा उसके विद्वान आचार्य हेमचन्द्र से जोड़ दिया। आचार्य हेमचन्द्र के ग्रन्थ- "व्याकरण और देशी नाममाला" में अनेक शब्द ब्रजभाषा से मिलते-जुलते हैं।

Scanned by CamScanner

हेमचन्द्र साहित्य	ब्रजभाषा
अरधान	अधानौ
उक्खली	ऊखल
कोइला	कोयला
चाउला	चावल

अपभ्रंश के प्रसिद्ध ग्रन्थों जैसे- प्राकृत पैंगलम, रासो ग्रन्थ, राजस्थानी का पिंगल साहित्य आदि में ब्रजभाषा के अनेक उदाहरण मिलते हैं। प० दामोदर के ग्रन्थ 'उक्ति व्यक्ति प्रकरण' में ब्रजभाषा की छाप स्पष्ट दिखाई देती है। इसी प्रकार गोरखनाथ की भाषा में ब्रजभाषा के बहुत से शब्दों का प्रयोग हुआ है। सन्तों की बोलियों में भी बहुत से शब्द ब्रजभाषा के मिल जाते हैं।

ब्रजभाषा को काव्यात्मक परिपक्वता कृष्ण भक्ति आन्दोलन से मिली। इस आन्दोलन ने सम्पूर्ण भारत को ही ब्रजभाषा के रंग में रंग दिया। 15वीं शताब्दी की रचनाओं में विष्णुदास की भाषा को ब्रजभाषा का श्रेष्ठ रूप माना जाता है। विष्णुदास की 'महाभारत कथा, स्वर्गारोहण, रुक्मिणी मंगल, स्नेहलीला इनकी प्रमुख रचनाएं हैं। विष्णुदास की 'स्नेहलीला' की ब्रजभाषा का उदाहरण दृष्टव्य है—

तब उधौ आए यहाँ, श्री कृष्णचन्द के धाम
पाय लागि, वंदन कियो, बोलत ले ले नाम।

इसमें उधौ, चन्द, पाय, लागि, कियो, बोलत जैसे प्रयोग सूर की ब्रजभाषा जैसे लगते हैं।

ब्रजभाषा को पूर्ण वैभव प्रदान करने का कार्य आचार्य वल्लभ ने किया। इन्होंने श्रीनाथ' जी के मंदिर में ब्रजभाषा के कलाकारों को एकत्र करना शुरु किया। चार शिष्य वल्लभाचार्य के और चार शिष्य विट्ठलदास के- इन आठ शिष्यों ने ब्रजभाषा को अनेक शक्तियों से संचित कर उसे दिग्दिगन्त तक पहुँचा दिया। इन अष्टछाप के कवियों के नाम इस प्रकार हैं—

सूरदास, परमानन्ददास, कुम्भनदास, कृष्ण दास → वल्लभाचार्य
नन्ददास, चतुर्भुजदास, गोविन्दस्वामी, छीतस्वामी - विट्ठलदास

इन कवियों ने कृष्ण भक्ति का प्रचार-प्रसार किया और साहित्यिक ब्रजभाषा में अपने काव्य की रचना की। इन कवियों की भाषा में ठेठ अवधी ब्रजभाषा के शब्दों का प्रयोग देखा जा सकता है।

महाकवि सूरदास ने इस भाषा को प्रौढ़ता तथा गम्भीरता प्रदान की।

15वीं शताब्दी के कवि नारायणदास का "छिताईवार्ता" नामक ग्रन्थ भी ब्रजभाषा में लिखा गया। चतुर्भुज दास की 16वीं सदी की रचना 'मधुमालती कथा' भी भाषिक विकास की दृष्टि से उल्लेख्य है।

रीतिकालीन कवियों ने भी ब्रजभाषा को अपनाया। परन्तु ब्रज के सामने इस समय फारसी शेरो शायरी की चुनौती आ गई और साहित्य हल्के-फुल्के मनोरंजन का, दरबार को चमत्कृत करने का माध्यम बन गया। भक्ति, दर्शन, अध्यात्म के सुरम्य कानन में पली-बढ़ी ब्रजभाषा ने इस आग्रह की भी पूर्ति की

कहत, नटत, ~~रीझत~~ रीझत, खिझत, मिलत, खिलत लजियात।
भरे भवन में करत हैं नैनहिं सौं बात।।

इस कालखण्ड में ब्रजभाषा ने समास प्रधानता की शक्ति अर्जित की। ब्रजभाषा को इस क्षमता को देने में, केशव, देव, बिहारी, मतिराम, भिखारीदास जैसे असंख्य कवियों ने अपना बहुमूल्य योगदान दिया।

सन् 1857 के विद्रोह ने देश में जन-जागरण की आवश्यकता अनुभव की। ब्रजभाषा को भक्ति और श्रृंगार की अभिव्यक्ति की सामर्थ्य से परिपूर्ण मानकर उसमें राष्ट्रजागरण की शक्ति के अभाव की अनुभूति की। इसके लिए साहित्य में खड़ी बोली को प्रधानता दी जाने लगी। लेकिन ब्रजभाषा काव्य के पद पर इतने दिनों तक आसीन रही कि उसे उतारते-उतारते भी 70 वर्ष लग गए। परन्तु कविता-कामिनी का सौन्दर्य ब्रजभाषा के अलंकारों में ही अनुभव किया जाता रहा है, इसलिए आज भी कवियों को ब्रजभाषा की लोच एवं संगीतात्मकता बांधे हुए है। अपने गुणों के कारण, संस्कृति के रक्षण तथा प्रसार के कारण ही वह बोली होकर भी भाषा कहलाई। हिन्दी साहित्य सदैव इसका ऋणी रहेगा।

ब्रजभाषा की विशेषताएं →

1 यह एक विनम्र भाषा है, इसलिए इसमें कठोर ध्वनियों (ट वर्ग) का प्रयोग न के बराबर है। इसलिए ड, ड़ का उच्चारण 'र' रूप में होता है। जैसे- बड़ी-बरी, कण-कण — कन-कन।

2 शब्द रूपों में ऐकारान्त और औकारान्त की प्रवृत्ति पाई जाती है। जैसे- जावैं, देखैं, लड़कौ, दौरौ।

Scanned by CamScanner

(3) 'ल' के स्थान पर प्रायः 'र' का प्रयोग होता है। दुबले - दुबरे
(4) श, ष, स में से केवल 'स' ध्वनि का प्रयोग होता है। विशेष-विशेष
(5) ब्रज में 'ह' का लोप हो जाता है। जैसे- साहुकार - साउकार, बहु - बऊ
(6) स्त्रीवाची शब्द बनाने के लिए इनि, इनी, नी आदि प्रत्ययों का प्रयोग होता है। जैसे- पंडिताइनि, साधुनी, भूतनी आदि।
7 वर्तमानकालीन कृदन्त का निर्माण 'त' प्रत्यय जोड़कर किया जाता है। जैसे- खात, जात, मांजत आदि।
8 भूतकालीन कृदन्त में औ, यौ, इ, ई आदि प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है। चल्यौ, जल्यौ, चली आदि।
9 पूर्वकालिक कृदन्त में इ, ई को जोड़ा जाता है। जैसे- देखि, सुनि, जाइके, खाइके आदि।
10 ब्रजभाषा में कहीं-कहीं नपुंसक लिंग भी मिलता है। उदाहरण स्वरूप 'सोने' का नपुंसक लिंग रूप 'सोनौ' अथवा 'सोनों' ही ग्रामीण ब्रजभाषा में प्रचलित है।
11 हिन्दी से तुलना करने पर ब्रज के सर्वनाम रूपों में पर्याप्त भिन्नता है। हिन्दी के 'मैं' सर्वनाम के लिए 'हौं' सर्वनाम प्रयुक्त होता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि ब्रजभाषा अपनी सुकुमारता और कोमलता के लिए प्रसिद्ध है। कोमल भावों को स्पष्ट करने में यह भाषा पूर्णतः सक्षम है।

Scanned by CamScanner